डॉ० जय भगवान सिंगला प्रणीत 'प्रणम्य को प्रणाम' जीवनी में प्रयुक्त लोकोक्ति एवं मुहावरों का मनोभाषिकीय अध्ययन

डॉ० रमेश कुमार*

सहायक प्रोफेसर हिंदी

शहीद उधमसिंह राजकीय महाविद्यालय,

मटक माजरी, इंद्री, करनाल, (हरियाणा)

Email ID: rameshkumar94672@gmail.com

Accepted: 07.02.2023 **Published**: 01.03.2023

मुख्य-शब्द :- प्रणम्य को प्रणाम

शोध सारांश

'प्रणम्य को प्रणाम'' जीवनी में लेखक डॉ० जयभगवान सिंगला ने अपने पिता श्री लाला रामस्वरूप सिंगला के जीवन के वृत्तांतों एवं विविध घटनाओं को पाठकों के समक्ष जिस ढंग से और जिस भाषा में रखा है उसमें लाला जी के चरित्र और उनके अनुभव की सत्यता प्रत्यक्ष हो हुई है| इसमें वस्तुपरकता एवं भावात्मकता का समन्वय भी है। यह जीवनी डॉ० जयभगवान सिंगला द्वारा अपने पिता के जीवन की सच्ची समालेचना भी है। इसका प्रत्येक भाग लाला जी के जीवन की जिजीविषा और उनके क्रियाकलापों से संबंधित है। जीवनीकार ने इसमें उनके जीवन की विविध घटनाओं एवं विविध पहलुओं को, जिसे उन्होंने बहुत सूक्ष्मता से देखा भी था और भोगा भी था का सही एवं सटीक शब्दों में चित्रण किया है। इसके लेखक ने उनके जीवन के अनुभवों को सर्वाधिक महत्त्व देते हुए उनकी स्मृतियों को पुनर्जीवित करने का स्तुत्य एवं सफलतम प्रयास किया है। सफल जीवनी की विशिष्टता है असामान्य एवं महापुरुष तुल्य लाला रामस्वरूप सिंगला जी के असामान्य अनुभवों को पाठकों के समक्ष रखना। क्योंकि लेखक डॉ० जयभवान सिंगला उनके सुपुत्र हैं, इसलिए इस जीवनी में वर्णित सभी घटनाओं की सत्यता पर कोई प्रश्न चिह्न नहीं लगाया जा सकता। घटनाओं का सीधा संबंध दोनों से है, इसलिए यह जीवनी गुणवत्ता की दृष्टि से हिन्दी साहित्य की जीवनी विद्या को समृद्ध करेगी। लेखक ने अपने पिताजी के व्यक्तित्व एवं चारित्रिक गुणों से पाठक को अवगत ही नहीं कराया है वरन् इन्होंने अपने पिता की भाषायी कुशलता का भी परिचय कराया है। लेखक ने अपने पिता के जीवन के भोगे हुए अनुभवों से निकली कहावतों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों से उनके

दानवीर, दयावीर, कर्मवीर, प्रखर बुद्धि क्षमता, भाग्यशाली, तेजस्वी,अदम्य साहस, अद्‌भुत संघर्ष शक्ति, अद्‌भुत दूरद्दष्टा, साफगोई, जिंदादिली के धनी, स्वाभिमानी, विशाल हृदय के स्वामी, प्रगतिशील विचारों के धनी स्वरूप का चित्र खींचा है। उनका अभिव्यक्ति कौशल उनके जीवन के अनुभवों का प्रतिधित्व है। उनके द्वारा समय-समय एवं प्रसंगानुसार कहे मुहावरे एवं लोकोक्ति उनके व्यक्तित्व को और अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। इनके प्रयोग से उनका वांछित अर्थ प्रभावी एवं सरलता से अद्‌भुत सौंदर्य के साथ संप्रेषित होता है| उनकी भाषा लोकशक्ति के प्राणों से जीवंत उठी है।

Paper Identification

**Corresponding Author*

© IJRTS Takshila Foundation, डॉ० रमेश कुमार, All Rights Reserved.

प्रस्तावना-

भाषा दैनिक व्यवहार का एक माध्यम है| इस माध्यम के द्‌वारा जब हम अपने विचार विशेष रूप में प्रभावी ढंग से दूसरों तक प्रेषित करते हैं तो उसमें ध्वनियों, शब्दों, पदों, वाक्यों, अर्थों, प्रोक्‌तियों, अलंकारों, प्रतीकों, बिंबो और छंदों के साथ-साथ अभिव्यंजनानुरूप चयन संयोजन करते रहते हैं| साहित्यिक स्तर पर यह भाषा की सृजनात्मकता है और अर्थ स्तर पर यह प्रभावोत्पादकता है| यह सृजनात्मकता और प्रभावोत्पादकता रचनाकार के परिवेश, उसके समाज, उसके विचारों, संस्कारों और उसकी सूक्ष्म मनोभाषिकीय प्रक्रिया का प्रतिफलन होती है|

किसी भी रचना एवं रचनाकार की भाषा के अध्ययन के दो बिंदु हो सकते हैं एक भौतिक रूप में रचनाकार की भाषा जिसे हम अभिव्यक्ति भी कह सकते हैं और दूसरा रचनाकार की मनोभाषिकीय संरचना|पहली स्थिति में हम रचनाकार की केवल भाषा तक ही सीमित रहते हैं परंतु दूसरी स्थिति में हम रचनाकार द्‌वारा साहित्यिक सृजना के समय मानसिक अभिव्यंजना का भी अवलोकन करते हैं| एक तरह से दूसरी अवस्था थोड़ी जटिल होती है क्योंकि इस प्रक्रिया में अध्येता को रचनाकार के भाषिक प्रयोगों के साथ-

साथ उसके मानसिक संवेगों के संयोजन की सार्थकता और अभिव्यक्ति में आए सोष्ठव का अध्ययन बड़े संजीदा ढंग से करना पड़ता है|लेखक के मन के क्रोड में बैठना पड़ता है| यह प्रक्रिया भौतिक और सूक्ष्म रूप के संयोजन की परख होती है जिसमें आलोचक को बड़ी सावधानी से रचनाकार के कथ्य को और इससे भी परे जाकर कथ्य के कारणों पर भी विचार करना पड़ता है| या यूं कहें इस प्रक्रिया में हमें सर्वप्रथम रचनाकार की भाषा की बनावट को समझना पड़ता है| तत्पश्चात् रचनाकार के कथ्य को समझना पड़ता है| फिर दोनों के संतुलन और कथ्य के अनुरूप रचनाकार द्वारा प्रयोग किए गए विभिन्न भाषकीय उपकरणों के कारणों की तह तक जाना होता है|

इस अध्ययन में हम पहले यह देखते हैं कि रचनाकार ने अपनी साहित्यिक भाषा में यह ध्वनि, यह शब्द, यह पद, वाक्य एवं अर्थ आदि का प्रयोग किया है फिर हम यह देखते हैं कि रचनाकार ने इन भाषायी उपकरणों के अनेक विकल्पों में से अपनी अभिव्यंजना के लिए इन्हीं विकल्पों का प्रयोग क्यों किया है| जब हम इस क्यों की पड़ताल करते हैं तो हमें रचनाकार के मनोभाषिकीय अध्ययन तक जाना पड़ता है| वस्तुतः रचनाकार के मन की भाषा का अध्ययन करना ही इसका प्रमुख लक्ष्य है और यही उसका मनोभाषिकीय अध्ययन है|

19 वीं शताब्दी के अंत से पहले भाषा के मनोविज्ञान के रूप में मनो के लिए सैद्धांतिक ढांचा विकसित होना शुरू हो गया था। एडवर्ड और फ्रेडरिक बार्डनेट के काम से वह नींव रखी जिसे बाद में मनोभाषाविज्ञान के विज्ञान के रूप में जाना जाने लगा। 1936 में, उस समय के एक प्रमुख मनोवैज्ञानिक जैकब कांटोर ने अपनी पुस्तक एन ऑब्जेक्टिव कोजी ऑफ़ ग्रामर के विवरण के रूप में 'मनोभाषाविजन' शब्द का प्रयोग किया। हालांकि शब्द 'साइकोलिंग्विस्टिक्स 1946 में व्यापक उपयोग में आया जब कांटोर के छात्र निकोलस जोंको में साइकोलिटिस्टिक्स-ए-रिव्यू शीर्षक से एक लेख प्रकाशित किया। प्रोंको की इच्छा एक ही नाम के तहत असंख्य संबंधित सैद्धांतिक दृष्टिकोणों को एकजुट करने की थी। मनोविजन का उपयोग पहली बार एक अंतःविषय विज्ञान ''जो सुसंगत हो सकता है'' के बारे में बात करने के लिए किया गया था।

मनोभाषाविज्ञान भाषाई कारकों और मनोवैज्ञानिक पहलुओं के बीच का अत:संबंध का है। अनुशासन मुख्य रूप से उन तंत्रों से संबंधित है जिनके द्वारा भाषा को संबोधित किया जाता है और मन-मस्तिष्क में

इसका प्रतिनिधित्व किया जाता है। मनोभाषाविज्ञान उन संज्ञानात्मक संकायों और प्रक्रियाओं से संबंधित है जो भाषा के निर्माण के लिए आवश्यक है। यह श्रोता द्वारा इन निर्माणों की धारणा से भी संबंधित है।

मनोभाषाविज्ञान में प्रारंभिक प्रयास दार्शनिक और शैक्षिक क्षेत्रों में थे, मुख्य रूप से अनुप्रयुक्त विज्ञानों के अतिरिक्त अन्य विभागों में उनके स्थान के कारण आधुनिक शोध जीव विज्ञान, तंत्रिका विज्ञान, संज्ञानात्मक विज्ञान, भाषा विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, मानव विकास, संचार सिद्धांतों और सूचना विज्ञान का उपयोग यह अध्ययन करने के लिए करता है कि मन-मस्तिष्क भाषा को कैसे संसाधित करता है।

मस्तिष्क के न्यूरोलॉजिकल कार्य कलापों का अध्ययन करने के लिए गैर- इनवेसिव तकनीकों के साथ कई उपविषय है। उदाहरण के लिए- न्यूरो भाषाविज्ञान अपने आप में एक क्षेत्र बन गया है और विकासात्मक मनोभाषाविज्ञान, मनोभाषाविज्ञान की एक शाखा के रूप में भाषा सीखने की क्षमता से संबंधित है।

भाषा की समझ में रुचि रखने वाला एक शोधकर्ता पढ़ने के दौरान पाठ में पैटर्न से आर्थोग्राफिक, रूपात्मक ध्वन्यात्मक, और अर्थ संबंधी जानकारी निकालने में शामिल प्रक्रियाओं की जांच करने के लिए शब्दों का अध्ययन करता है। मनोभाषिक विज्ञान के अंतर्गत हम यह अध्ययन करते हैं कि शब्दों को वैचारिक या शब्दार्थ स्तर से शुरू करने के लिए कैसे तैयार किया जाता है। यहाँ हम यही अध्ययन करने का प्रयास करेंगे कि इस जीवनी में प्रयुक्त मुहावरे, लोकोक्ति एवं कहावतों के प्रयोग के पीछे लेखक का वैचारिक संदर्भ क्या रहा है|

विस्तार-

लेखक डॉ० जयभगवान सिंगला द्वारा विरचित यह जीवनी 'प्रणम्य को प्रणाम' परतंत्र भारत से स्वतंत्र भारत और सनातन भारत का कैनवास कहा जा सकता है| इसमें लेखक ने अपने देवतुल्य पिता श्री लाला रामस्वरूप सिंगला के औदात्यमयी व्यक्तित्व के विभिन्न रूपों के साथ गांव की प्रकृति, संस्कृति, दिनचर्या, खानपान, सौहार्द एवं संस्कारों की मनोरम एवं बेबाक अभिव्यक्ति की है| यह जीवनी हमें वर्तमान युग में आने वाली सामाजिक, पारिवारिक, चारित्रिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, जटिलताओं को दूर कर निरन्तर संघर्ष करते हुए आदर्श मानव बनने की प्रेरणा देती है| इसके अध्ययन करने से ऐसा लगता है कि

हमने सिनेमा हॉल में बैठ कर अपना पुराना भारत, अपना पुराना हरियाणा देख लिया हो| इसमें लेखक ने बड़ी कुशलता के साथ लाला रामस्वरूप सिंगला जी के जीवन को, उनके जीवन की घटनाओं को पाठक के सामने इस ढंग से प्रस्तुत किया है कि पाठक इसे आद्यंत पढ़कर ही दम लेता है| यह जीवनी उनके जीवन एवं तत्कालीन समाज की सच्ची झांकी है| इसकी सहज, सरल भाषा से अध्येता को आत्मिक आनंद की अनुभूति तो होती ही है वरन् इसको पढ़ने से अपनेपन का भाव भी जागृत होता है| लगता है हम बहुत-सी चीजों को, बहुत-सी बातों को, बहुत से व्यवहार को जो एक आदर्श मानव के लिए अत्यावश्यक हैं; हम नजरअंदाज कर रहे हैं| जीवनी में वर्णित बहुत से ऐसे दृष्टांत हैं जो मनुष्यों के मध्य विभेद उत्पन्न कर करते हैं, उनको त्यागने की प्रेरणा मिलती है| यदि जीवन में समरसता और आनंद को बनाए रखना है तो इस जीवनी से वर्णित लाला रामस्वरूप सिंगला के जीवन के अनभवों को आत्मसात् करने की आवश्यकता है| वे समाज के लिए भी एक अनुकरणीय विभूति हैं|

यह जीवनी हमें लोक जीवन के बहुत से अनोखे एवं लुप्तप्राय शब्दों, वाक्यों, मुहावरों एवं लोकोक्ति से परिचय कराती है| एक दृष्टि से यह जीवनी लोक भाषा को; जबकि हिंदी को ही अपनी अस्मिता बचाने की चुनौती मिल रही है, पुनः प्रयोग में लाकर उसकी जीवंतता और उपादेयता को बचाए रखने का स्तुत्य प्रयास है| इसके लेखक डॉ० जय भगवान सिंगला द्वारा इसमें यत्र-तत्र ही नहीं अपितु सर्वत्र ही प्रसंगानुसार लोक शब्दावली का प्रयोग किया है जो इसके अध्ययन का सहज आकर्षण बन गया है| लेखक ने इसमें स्थान-स्थान पर ऐसे किस्से एवं लघु कहानियों की मीनाकारी ही की है जिनसे सौहार्द्र एवं समरसता के मनोरम चित्रपट की सृष्टि होती है|

यहां हम जीवनी में प्रयुक्त लोकोक्ति एवं मुहावरों के संदर्भानुसार प्रयोग का विवेचन करने का प्रयास करेंगे-"बच्चे का मन प्रोत्साहन भरे ये शब्द सुनकर बल्लियों उछल गया|"[1] यहाँ मुहावरा बाल्यावस्था में ही लाला रामस्वरूप सिंगला जी की व्यापारिक योग्यता एवं बुद्धि कौशल को प्रमाणित करता है| यह दर्शाता है कि उनमें व्यापार को लेकर कितना आत्मविश्वास और उत्साह था| वे बड़ों के मध्य बाल्यावस्था में ही अपने आपको यह प्रमाणित करते हैं कि वह भी व्यापारिक कौशल का धनी है|

कुछ पुराने बनिए लाला रामस्वरूप सिंगला जी की प्रखर बुद्धि और दूरदृष्टिता से चिढ़ते थे, किंतु उस समय व्यापार की देखरेख करने वाले उनके चाचा ज्योति प्रसाद को लाला रामस्वरूप सिंगला पर बहुत भरोसा था. आढ़ती ने उनके चाचा को यहाँ तक कहा कि यह तुम्हारा नाश करेगा, किन्तु चाचा ने जवाब दिया-"चाहे यह सारा घर लुटा दे, भाई काम तो अब यही करेगा और अपनी मर्जी से करेगा| आढ़ती ज्योति प्रसाद के मुंह से यह शब्द सुनकर मन मसोसकर रह गया|"[2] इस मुहावरे में लाला रामस्वरूप सिंगला की सफलता, आढ़ती की निष्फलता और उनके चाचा ज्योतिप्रसाद की रामस्वरूप के प्रति गहरी होती निष्ठा का पता चलता है|जो लोग लाला रामस्वरूप सिंगला को सामान्य लड़का मानते थे यह उनके लिए जवाब था| एक तरह से यहां लालाजी ने एक तीर से दो शिकार किए| अपने आप को सिद्ध किया और विरोधियों को मुंहतोड़ जवाब दिया|

अपने बीमार पुत्र के प्रति लाला रामस्वरूप सिंगला जी का सेवाभाव देखते ही बनता था| वे अपने पुत्र के लिए उन्होंने बादाम रोगन का तेल निकलवाने के लिए दिल्ली 10 बर्षों तक निरन्तर गए| लेखक पिता के इस ऋण से कैसे उऋण हो सकते हैं| उनके पुत्र एवं इस जीवनी के प्रणेता डॉ० जय भगवान सिंगला जी अपने शब्दों से उऋण होने के प्रयास में लिखते हैं -"जो भी व्यक्ति इस बात को सुनता था दांतों तले उंगली दबा लेता था| बाद में मशीनों का युग आ गया और लोग मशीनों से रोगन जोश निकलवाने लगे|"[3]

उक्त मुहावरे के संदर्भ में लाला रामस्वरूप सिंगला की अपने पुत्र के स्वास्थ्य के प्रति चिंता और सेवा-भाव प्रकट होता है कि वे 10 वर्ष तक संतान के स्वास्थ्य के प्रति किस साधना भाव से समर्पित थे|

नारी के मौलिक रूप को महत्त्व देने वाले लाला रामस्वरूप सिंगला जी का यह लोकोक्तिमय कथन उल्लेखनीय है-"बहू को के सुथरा, के माड़ा, बहू की तो कोख देखी जावै|"[4] इस कथन से स्पष्ट है कि लाला रामस्वरूप सिंगला नारी के बाह्य सौंदर्य की अपेक्षा उसके जननी रूप को ही श्रेष्ठ समझते थे|

लाला रामस्वरूप सिंगला जी समाज के पंचों को परमेश्वर तुल्य मानते थे| उनका सामाजिक न्याय व्यवस्था में अटूट विश्वास था| डॉ० जय भगवान सिंगला लिखते हैं-"समाज में गलत और निंदनीय काम करने पर पंचायत उसका हुक्का पानी बंद कर देती थी|"[5] इस लोकोक्ति से स्पष्ट है कि गलत काम करने वाले व्यक्ति को समाज किस प्रकार की सजा देगा, यह उस समाज के प्रमुख लोगों की मनोवृति पर निर्भर करता

था| वे सामाजिक अनादर से अपराधी को कुछ सीख लेने और उसे सुधरने का अवसर प्रदान करते थे| यह प्रक्रिया अपराधी को मानसिक रूप से बदलने का प्रयास करती है |

लाला रामस्वरूप सिंगला ईमानदार और दूसरों पर आंख बंद करके विश्वास करने वाले सज्जन व्यापारी थे कुरुक्षेत्र में अपनी नई कोठी की रजिस्ट्री इसलिए नहीं करवाते कि उन्हें दूसरों पर विश्वास है कि वे किसी के साथ बुरा नहीं करेंगे| परंतु आत्माराम जैन द्वारा दी गई राय को वे बाद में मान लेते हैं| लेखक लिखते हैं-"बाद में पिता ने पिताजी ने आत्माराम जैन का बहुत शुक्रिया किया कि उनकी बदौलत कोठी की रजिस्ट्री बन गई वरन् वह तो कागजों के मामले में बहुत लापरवाह थे| उनकी जुबान पर तो सदा एक ही बात रहती थी किसी के माथे की लकीर कोई नहीं पौंछ सकता|"[6] इस लोकोक्ति से यह स्पष्ट होता है लाला रामस्वरूप सिंगला करोड़ों की संपत्ति के मालिक होकर भी परस्पर विश्वास पर चलते थे| वे प्राचीन संस्कारों के धनी थे जिसमें जुबान ही रजिस्ट्री होती थी|

लाला रामस्वरूप सिंगला व्यापारी वासतुकला की सूक्ष्म समझ रखते थे| अपनी हवेली को बनवाने के लिए उन्होंने निपुण-से-निपुण कारीगरों का चयन किया जो कि उनके भवन कला के प्रति प्रेम को प्रकट करता है| लेखक का यह कथन इसका प्रमाण है-"वह अपनी मर्जी के मालिक होते थे लेकिन बिना किसी आर्किटेक्ट के वह उस समय वास्तुकला का ऐसा नमूना पेश करते थे कि देखने वाला दांतों के तले उंगली दबा कर रह जाता था|"[7]

भव्यता एवं सौंदर्य प्रेम लाला रामस्वरूप सिंगला का विशेष गुण था| किशोरावस्था में अमृतसर की बजाए लाहौर बाजार से लोइयां खरीदने के लिए गए लाला रामस्वरूप सिंगला लाहौर के बाजार की भव्यता एवं समृद्धि को देखकर चकित रह जाते हैं| लाहौर बाजार की सुंदरता और समृद्धि के संबंध में-"उन्होंने बताया कि वहाँ (लाहौर) बाज़ारों में इतनी जगमग थी कि आंखें चुंधिया जाएं|"[8]"लाहौर की बातें सुनकर सभी गांव वालों की आंखें फटी-की- फटी रह गईं|"[9] इस वाक्य में प्रयुक्त मुहावरा संकेत करता है कि रामस्वरूप के लाहौर पर्यटन का अनुभव गांव के सभी लोग बड़े चाव से सुनते थे| लाला रामस्वरूप का गाँव के परमादरणीय बन गए थे| गांव के लोग उनके अनुभव को सुनना चाहते थे और लाला रामस्वरूप भी अपने अनुभवों को साझा कर अपनी सांझी संस्कृति के प्रति प्रेम का निदर्शन करते थे|

"एक बार मार्केट कमेटी पुंडरी में ऐसा भ्रष्ट सेक्रेटरी आया कि उसका पेट ही नहीं भरता था"[10] इसमें प्रयुक्त मुहावरे से लाला रामस्वरूप जी की भ्रष्टाचार के प्रति घृणा भाव का परिचय मिलता है| उन्होंने इससे पूर्व भी भ्रष्ट आचरण का अपना एक अनुभव पटियाला रेलवे स्टेशन पर टिकट चैकर द्वारा दो आने रिश्वत लेने का लिखा है। इससे प्रतीत होता है कि शिवत एवं भ्रष्टाचार से उन्हें किती घृणा थी। लेखक लिखते हैं-" दो आने की रिश्वत ने मेरे बाल मन में कड़वाट भर भर दी थी। मुझे तब से ही रिश्वत देने से नफरत है।"[11] वस्तुत: लाला रामस्वरूप सिंगला स्वच्छ आचरण और ईमानदारदार व्यापारी की छवि वाले व्यक्तित्व थे। उनके इस आचरण में उनके आदर्श संस्कारों की बहुत बड़ी भूमिका थी।

"मण्डी वाले सभी आढ़ती, विशेषकर हमारे बिरादरी भाई, बेशुमार चिढ़ने लगे पर परमात्मा का आशीर्वाद ऐसा रहा कि किसी की हिम्मत नहीं हुई कि पिता जी की तरफ आँख उठा कर देख सकें।"[12] इसमें लाला रामस्वरूप की व्यापार के प्रति निष्ठा, ईमानदारी एवं संघर्ष की भावना परिलक्षित होती है| उन्होंने अपने व्यापार और अपनी सफलता का बहुत बड़ा हथियार संघर्ष को बनाया। उनका दीन-दुनिया को देखने का अनुभव (पिताजी ने दुनिया देख रखी थी)''[13] और उनकी दूरदृष्टिता अन्य व्यापारियों के लिए अनुकरणीय सिद्ध हुई। इससे प्रमाणित होता है कि लाला रामस्वरूप सिंगला अपने सिद्धान्तों के प्रति कितने दृढ निश्चयी थे और अपने आदर्शों के पक्के धुनी इंसान थे| विरोधियों को चित्त करने और सहयोगियों को संग लेकर चलने की चौसरी कला में वे पारंगत थे।

लाला रामस्वरूप सिंगला जी मन से, धन से और विचारों से तो सिद्ध समृद्ध थे ही उनका भक्तिभाव भी अनन्य है। वे धनी होते हुए भी मन में कहीं अहंकार न करके ईश्वर को ही कर्ता का श्रेय देते थे। देखिए- "कहने को मनुष्य कितनी ही डींगे क्यूँ न हाँकता फिरे, लेकिन वास्तव में होता वही है जो पिता परम परमात्मा चाहता है। किसी ने बिल्कुल सही कहा है कि उसकी मर्जी के बगैर पत्ता भी नहीं हिल सकता।"[14]

उक्त मुहावरा दर्शाता है कि रामस्वरूप का हृदय कितना दयालु और ईश्वर-कृतज्ञ था। यह उनके मन का भाव ही है कि वे प्रत्येक कार्य ईश्वरीय कृपा का प्रसाद मानते थे। वे सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान रचनाकार की शक्ति को पहचानते भी थे और मानते भी थे तभी तो उनका मन दृढ़ निश्चयी था और बुराई में विश्वास

करने वालों को दो टूक समझा देता था-"इंसान लाख बुरा चाहे क्या होता है, होता वही है जो मंजूरे खुदा होता है|"[15] यहाँ कबीरदास की वो साखी स्मरण हो जाती है कि- उस समरथ का दास हो कभी न होवे अकाज|

एक नितांत व्यावसायिक एवं व्यापारिक पर व्यक्तित्व के धनी साथ-साथ ईश्वर के प्रति इतनी आस्था और दृढ विश्वास का संयोजन विरले ही देखने को मिलता है।

लाला रामस्वरूप सिंगला भविष्य दृष्टा और सूझ-बूझ के धनी व्यापारी थे। उन्होंने समाज में केवल भाईचारा और समरसता का कार्य ही प्रिय रहा है। बाबू धर्मवीर के साथ व्यापार का बंटवारा जिस सहनशीलता एवं सूझबूझ से किया वह उनकी व्यापारिक एवं व्यावहारिक निपुणता का परिचायक है। उन्होंने एक समय भले ही कुछ हानि भी उठानी पड़ी हो परन्तु आपसी सौहार्द बनाए रखने और अपने विरोधियों को चित्त करने की कला उनको आती थी| डॉ० जय भगवान सिंगला लिखते हैं-"हमारे दुश्मन जो मौके की ताक में बैठे थे, उनकी उम्मीदों पर लाखों घड़े पानी पड़ गया।"[16] उन्होंने बंटवारा सहनशीलता से ही किया और अपनी नई दुकान का उद्घाटन करने के लिए सभी को निमंत्रण पत्र देकर प्रेम एवं मोहब्बत की अनूठी मिशाल प्रस्तुत की-"लाला जी ! हमारी नई इकान का मुहूर्त फलाने दिन का है, आपने दर्शन देने हैं।"[17] बाबू जी के मुख से ऐसे शब्द सुनकर मण्डी वालों की छाती पर साँप लोट गया।"[18] उक्त दोनों मुहावरें प्रमाणित करते हैं कि लाला रामस्वरूप यह भली भाँति जानते थे कि समाज में भाईचारा कैसे बनाए रखो जा सकता है और विरोधियों को कैसे परास्त किया जा सकता| वस्तुत: व्यापार की सूक्ष्म समझ और सामाजिक सौहार्द उनके विशेष गुण रहे हैं।

लाला रामस्वरूप सिंगला व्यापार के क्षेत्र में प्रतिभा सम्पन्न थे। उनकी प्रतिभा को संकेत करती एक लोकोक्ति देखिए-"कहते हैं कि पूत के पैर पालने में ही नज़र का जाते हैं।"[19] इस लोकोक्ति में लाला रामस्वरूप जी का व्यापारिक पुरुषार्थ एवं उनके व्यापार के व्यास का आभास होता है। बचपन में ही लोई लेने उसके निर्माण स्थान पर लाहौर जाना, बारदाना के लिए कोलकाता जाना और दाल, चावल, गेहूँ आदि के व्यापार को कश्मीर से कन्याकुमारी तक फैलाना यह प्रमाणित करता है कि उनके लिए शायद ही कोई पालना बना था जिसमें उनके पैर समा सकते हों| उनके लिए लगभग भारत का संपूर्ण क्षेत्र में एक पालना था| वे जहाँ भी गए अपनी और अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़कर आए- चाहे यह लाहौर हो, अनारकली बाजार हो,

हिमाचल, मुम्बई, कोचीन, चैन्नई, अकोला, कोलकाता, दिल्ली, बिहार, उत्तर प्रदेश क्यों न हो, उनकी और उनके व्यक्तित्व की धमक हर जगह व्याप्त हुई|

रामस्वरूप सिंगला अदम्य साहरा और लाला अद्द्भुत संघर्ष शक्ति की प्रतिमूर्ति थे। भारत में आपात्काल लगने के कारण सन् 1975 में उन्हें व्यापार में बहुत हानि हुई, लगभग व्यापार भयानक रसातल में चला गया था। ऐसी विषम परिस्थिति में समाज कैसा व्यवहार करता है, यह लेखक के इस कथन से स्पष्ट हो जाता है-"जो लोग सारा दिन हमारी चापलूसी किया करते थे, उन सबने पूरी तरह से हमारी ओर से मुँह मोड़ लिया ।"[20] इस मुहावरोक्ति में लेखक ने समाज के स्वार्थ और ईर्ष्या भाव को बेबाक अभिव्यक्त किया है। लेखक के मतानुसार समाज और अपने विरोधियों की वास्तविकता की पहचान दुर्दिन में ही होती है, किन्तु लाला रामस्वरूप के अदम्य पुरुषार्थ और तेजस्विता ने अपने को स्थापित विरोधियों व्यापार पुन: स्थापित कर विरोधियों को कड़ा संदेश दिया। लेखक लिखते हैं-"कहते हैं, "जाको राखे साईयाँ मार सके न कोय ।"xxx पिता जी ने जिन्दगी में कभी हार नहीं मानी थी और न ही किसी की खुशामद की थी।"[21] वे केवल और केवल संघर्ष और दिन-रात की मेहनत और अपनी नेक नीयत और परमात्मा के प्रति विश्वास के बलबूते ही अपने व्यापार एवं पर परिवार को नुकशान के भँवर से निकाल लेते हैं।

लाला रामस्वरूप अपने बहुमूल्य समय को जाया नहीं करते थे। उनकी इस प्रवृत्ति को इंगित करती लेखक की यह उक्ति-"कहते हैं शक्कर खोरे को शक्कर और शराबी को शराब कहीं-न-कहीं से मिल ही जाती है। लेकिन यह कहावत केवल इन दो चीज़ों के लिए ही नहीं बनी है।"[22] यह कहावत उनके पिता पर भी अक्षरशः परन्तु सकारात्मक अर्थ में लागू हो तो है, क्योंकि उनकी व्यापारिक बुद्धि और समय के सदुपयोग की प्रवृत्ति उन्हें कहीं भी खाली समय में मॉण्डियों की ओर मोड़ देती थी। वे रिक्त समय का सदुपयोग करते हुए व्यापारिक दृष्टि से और सामाजिकता निभाते हुए अपने व्यापार को नित् नई ऊँचाइयों तक लेकर गए हैं। बाल्यावस्था में बारात में जाकर ट्रेन आने के शेष दो घण्टे को वे बाज़ार में लगाते हैं जबकि अन्य सभी बाराती स्टेशन पर ही ट्रेन की प्रतीक्षा बैठे रहते हैं।

लाला राम स्वरूप सिंगला दानी सज्जन और नेक नीयत वाले थे। समाज सेवा के कार्य में दिल खोल कर धन लगाते थे चाहे व्यापार में घाटा भी क्यों न हो रहा हो। आँखों के आप्रेशन के लगने वाले शिविर के लिए

प्रतिदिन खर्च के 5 हजार रुपये न होने के बारे में लेखक लिखते हैं-"सुबह कैम्प लगना था कैम्प के लिए कम-से कम पाँच हजार रुपये प्रतिदिन की आवश्यकता थी। उस समय हम भारी नुकशान में चल रहे थे। पाँच हजार भी हमारे लिए बहुत बड़ी रकम बन गई थी। पाँच सौ रुपये एकत्र करना भी टेढ़ी खीर लगता था।"[23] किन्तु लाला रामस्वरूप सिंगला के दृढ़ आत्मविश्वास और प्रभु के प्रति अटूट श्रद्धा ने उनकी इस विकट समस्य का समाधान कर खीर को सीधा कर दिखाया।

उक्त मुहावरे के प्रयोग से लेखक बताना चाहता है कि समस्या कितनी भयावह थी, परन्तु उनके पिताजी का साहस ऐसी स्थिति में अंगद का पैर हो जाता था। अंतत: विजय आस्था, विश्वास एवं सेवाभाव की ही होती।

लाला रामस्वरूप का अपने परिवार और अपने बेटों पर अगाध विश्वास था। परिवार विरोधी बातों को सुनना उन्हें तनिक भी पसंद नहीं था। एक बार कुछ राईस मिल वाले लेखक के संबंध में 'लाला जी' से शिकायत करते हैं तो उनकी प्रतिक्रिया देखते ही बनती है-"जैसे ही पिता जी के कान में उनके मुख से निकले शब्द पडे, उनका पारा गर्म हो गया। उन्होंने उन शैलर वालों को इतनी खरी-खोटी सुनाई कि फिर जिन्दगी में दोबारा किसी ने उनसे मेरी शिकायत करने की हिम्मत नहीं दिखाई।"[24] इस प्रकार परिवार के प्रति उनका विश्वास अटल था।-" पिता जी हिम्मत करते गए, हम सभी उनके पीछे-पीछे चलते रहे, प्रभु सदा सहाई रहे और देखते-ही-देखते नुकसान ऐसे गायब हो गया जैसे 'गधे के सिर से सींग।"[25] वस्तुतः गधे के सिर के सींग से नुकसान की तुलना करके लेखक यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि उनके पिताजी के साहस, ईमानदारी एवं संघर्ष के आगे हानि तुच्छ थी। वे 'आगे दौड़ पीछे छोड़ 26 के पक्षधर नहीं थे। उनकी सोच यही थी कि सचेत एवं निगरानी के साथ जीवन में चलना चाहिए|

निरन्तर संघर्ष करते रहने और दान-दया-धर्म में रुचि रखने वाले लाला रामस्वरूप के निम्न मुहावरापरक संवाद कितने सार्थक एवं प्रेरणाप्रद हैं-"भैंस को जितना चारा डालोगे उतना ही दूध देगी', 'कोल्हू नै जितना चलाओगे उतना ही तेल निकलेगा।,"[27] "लक्ष्मी चलायमान होती है, उसे तिजौरी में बंद करके नहीं रखा जा सकता। अगर उसे सदा-सदा के लिए बाँध कर रखना हो तो उसका एक ही तरीका है, उसे धर्म के खूँटे के साथ बाँध दो।"[28] इस प्रकार के संवाद उनकी दानवीरता एवं कर्मठता के परिचायक हैं।

स्वाभिमान पर चोट करने वाले के विरुद्ध वे खूंखार हो जाते थे। हैड एनालिस्ट द्वारा दुकान पर आकर अपशब्द बोलने पर लाला रामस्वरूप ने उन्हें गर्दन से पकड़ कर डाँटते हुए उसकी सारी हैकड़ी निकाल दी और बाबू धर्मबीर के सुपुर्द कर दिया-"उन्हें आया देख, हैड एनालिस्ट की जान-में-जान आई।.....बाबू जी ने पिता को मनाने की बहुत कोशिश की लेकिन पिता जी अपनी बात से टस-से-मस नहीं हुए।....इसलिए हैड एनालिस्ट ने कड़वी घूँट पीने में ही अपनी भलाई समझी और सबके सामने पिता जी से माफ़ी माँगी।"[29]

बुजुर्ग और सयाने आदमियों में यह विशेषता होती है कि वो अपनी बात को 'कम और असरदार शब्दों में कहने में विश्वास रखते हैं। कालान्तर में वही शब्द, कहावतें, लोकोक्तियाँ और मुहावरे बन जाते हैं। लाला रामस्वरूप सिंगला नपे-तुले कम शब्दों में इस तरह से कह जाते थे कि सुनने वाला बिना ज्यादा समय गँवाए तुरन्त समझ जाता था कि वह क्या कहना चाह रहे हैं। उनके द्वारा प्रयुक्त कहावतें, मुहावरे एवं लोकोक्तियों की सूची इस जीवनी के लेखक डा० जयभगवान सिंगला ने इस प्रकार दी है:- "रौंदा जावै मरे की खबर ल्यावै' अर्थात जो व्यक्ति आधे-अधूरे मन से काम करेगा वो सदा असफल रहेगा। 'मालिक अगर एक पैसा चोरी करता है तो भूत100 पैसे चोरी करते हैं' अर्थात अगर मालिक की नीयत ठीक नहीं है तो वो दुकान कभी मुनाफा नहीं कमा सकती। मालिक की खराब नीयत देखकर उसके नौकर भी बेईमान हो जाते हैं। 'हिम्मते मर्दा मददे खुदा' अर्थात पुरुषार्थ करने वाले व्यक्ति का ईश्वर भी साथ देते हैं। 'मेरे मालिक नै रोजी ना दिए लकड़ियाँ नै जाणा पड़ेगा' अर्थात मेहनत करने से जी चुराना। "नकटे बैठे थे, नाक वाले आवें थे। नकटे बोले, ओ आवें नकटे, ओ आवें नकटे' अर्थात दोष तो अपना हो और निर्दोष व्यक्ति पर वो दोष लगाने की कोशिश करना। अपनी कमी दूसरे पर थोपने की कोशिश करना। 'एक तो चोरी दूसरे सीना जोरी' अर्थात कसूरवार होकर भी सामने वाले को दबाने की कोशिश करना। 'बच्चे के पैर पालने म्हें ही नजर आजैं' अर्थात होनहार व्यक्ति के आसार शुरू में ही नजर आ जाते हैं। 'खाली बैठा बनिया के करै, इधर के बाट उधर घरै' अर्थात सार्थक काम करने की बजाय फिजूल में काम में समय खराब करना। 'घी नहीं खाया, पीपे ही बजाए सही' अर्थात काम करने पर अगर मुनाफा नहीं भी हुआ तो क्या, दूसरों को तो मुनाफा होता दिखाई देता है अर्थात् बाज़ार में नाम होता है। 'चलदा फिरदा बनिया घड़या पड़दा सुनार' अर्थात सफल व्यक्ति वहीं है जो अपना कर्म करता रहे। 'बनत बनावै बानिया कर कर करै कराड़' अर्थात् समझदार व्यक्ति मुसीबत के समय फिजूल

बातें या दूसरों पर दोषारोपण करने की बजाय कोई-न-कोई रास्ता निकाल लेता है। 'नानौ मन तेल होवेगा, ना राधा नाचेगी' अर्थात काम ना करना पड़े इसलिए कोई असम्भव शर्त लगा देना। 'जैसा मुँह वैसी चपेड़' अर्थात जैसा व्यक्ति हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना पड़ता है।, 'मुँह धोया धाया रहगया' अर्थात काम होते-होते रह जाना।, 'मुँहखावे आँख लजावें' अर्थात अगर तुम किसी का एहसान लोगे तो उसके सामने झुकना पड़ेगा।, 'अफसर की अगाड़ी घोड़े की पछाड़ी, अच्छी नहीं होती' अर्थात दोनों में नुकसान / बेगार का हर जा है।,'किसी के भाग का कोई नहीं खोस सकदा' अर्थात् किसी की किस्मत में लिखा कोई नहीं छीनता।'भाव बदल जाते हैं, स्वभाव नहीं बदलते' अर्थात चीजों के भाव तो परिवर्तनशील है परन्तु मनुष्य का स्वभाव नहीं बदला। मनुष्य की आदत वैसे की वैसी रहती है। 'बहुओं हाथ चोर मरवाना' अर्थात स्वयं कार्य न करके अक्षम व्यक्तियों से काम करवाने की चेष्टा करना।, 'सबेरी जमींदार का मुँह देखना शुभ होता है, ब्राह्मण का मुंह देखना अशुभ होता है (ये कर्म से जोड़ कर देखा गया है) अर्थात जो व्यक्ति उचित और तय समय पर अपना कर्म करता है उसके दर्शन शुभ होते हैं और जो अपना कर्म समय पर नहीं करता उसके दर्शन करना भी अशुभ हैं।, 'कोई किसी का कर्म नहीं पूँछ सकता' अर्थात भाग्य का लिखा अवश्य मिलेगा दुनिया की कोई भी शक्ति उसे छीन नहीं सकती।, 'दाम बनावै काम' अर्थात पैसे का काम पैसे से होता है मात्र बातों से नहीं।, 'गरीब की जोरू सब की भाभी' अर्थात गरीब व्यक्ति की हैसियत, कम करके आंकी जाती है।,'टोटे म्हें बड़े तै बड़ा रिश्तेदार मुँहमोड़ लेवै' अर्थात नुकसान के समय विरले ही साथ देते हैं।, 'घर का भाग घर की लक्ष्मी से होता है' अर्थात नारी का सम्मान करने से घर-परिवार को सौभाग्य प्राप्त होता है।, 'मरे बगैर स्वर्ग नी मिलदा' अर्थात जब तक अपना काम स्वयं नहीं करोगे सफलता नहीं मिलेगी।, 'रिश्तेदारी 100 साल की होती है' अर्थात सम्बन्ध बिगाड़ने नहीं चाहिए। ये सैंकड़ों वर्षों तक का मेल होता है।, 'तात्ते पानी तै घर नहीं जलते' अर्थात जायज़ खर्चे से कोई घर नहीं उजड़ता।, 'अच्छा रिश्तेदार भाग से मिलता है' अर्थात बिना सौभाग्य के अच्छे सम्बन्धी नहीं मिलते इसलिए रिश्तेदार मित्र प्यारों की कद्र करनी चाहिए। छोटी-मोटी बातों के लिए रिश्ते खराब नहीं करने चाहिए।,'12 साल में दरवाजों के भी मुँह बदल जाते हैं' अर्थात् समय के साथ सब कुछ बदल जाता है।, 'कुरड़ी के भाग जागगे' अर्थात किसी नालायक/ नाकाबिल व्यक्ति को कोई महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हासिल हो जाना।, 'अंधी पीस्से कुत्ता चाट्टै' अर्थात् बिना समझदारी से किए गए कार्य / मेहनत का लाभ अन्य बेकार लोग उठा

लेते हैं।, 'अगर हाँडी का मुँह चौड़ा हो, कुत्ते को तो शर्म करनी चाहिए' अर्थात अगर कोई मना न करता हो तो भी मर्यादा नहीं लाँघनी चाहिए।, 'अपना होक्का अपनी मरोड़, पीया पीया नहीं दिया तोड़' अर्थात अपनी स्वयं को चौज की अपनी ही शान होती है।, 'हुक्का-पानी बन्द करना' अर्थात सम्बन्ध विच्छेद कर लेना।, 'शीशे म्हे मुंह देख ले' अर्थात अपनी औकात से ज्यादा बात मत कर।, 'पहल्याँ मुँह धौया' अर्थात अयोग्य व्यक्ति द्वारा बड़ी-बड़ी बातें करने पर उसे उसकी वास्तविकता बताना।, 'जा अपने बच्चे खल्या' अर्थात यह कार्य तेरे वश का नहीं।, 'अंधा न्याँदै, दो बुलावै' अगर नाकाबिल व्यक्ति को काम सौंपोगे तो दोगुना खर्चा आएगा।, 'तेरे जैसे निरे फिरें' अर्थात तेरे जैसे फालतू बोलने वाले या डींगें मारने वाले बहुत है।, 'तो उस दिन कोनी पैदा होया' अर्थात यह काम तेरे बस का नहीं।, 'तेरी माँ ने इतना दूध कोनी पयाया' अर्थात तेरी इतनी औकात नहीं कि तू यह कार्य कर सके।, 'मुनसिफ का फैसला तो बाम्बी की आवाज होता है' अर्थात कुदरत के और अदालत के निर्णय का कुछ पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता।, 'सरकार तो दूसरी खुदाई होती है' अर्थात सरकार बहुत शक्तिशाली होती है। 'हाथ पैर हिलायाँ बगैर कुछ नहीं मिलदा' अर्थात बिना परिश्रम किए कुछ भी मिलना असम्भव है।, 'बनिए का पैसा तीन ही चीजों पर लगता है मकान, व्याह और झगड़ा' अर्थात वैसे तो बनिये को पैसा बहुत प्यारा होता है पर अगर हवेली/भवन, शादी और झगड़े का मामला हो वो पैसे की कभी परवाह नहीं करता।, 'छाँव में जाइये, छाँव में आइये' कठोर मेहनत करना अर्थात सूर्योदय से पहले काम पर जाना और सूपर ही घर वापिस आना।, 'राम-राम करण म्हैं टोटा कोनी' अर्थात परस्पर अभिवादन से किसी का नुकसान नहीं होता।, 'बड़ा होगा अपने घर का होगा' अर्थात इस जमाने में कोई किसी की परवाह नहीं करता।, 'सेर नै सवा सेर बतेरे, घर नहीं तो बाहर बतेरे' अर्थात अगर कोई अपने आपको बड़ा समझता है दुनिया में। उससे बड़े बहुत मिल जाएँगे।, 'बनिए के पेशाब में बिच्छू पलते हैं' अर्थात बनिए से अगर बिना बात के दुश्मनी करोगे तो बहुत नुकसानदायक हो सकती है।. 'बनिया बणी का, नहीं तो ठणी का' अर्थात बणिया अगर ठीक रहे तो ठीक वरना बिगड़ने पर बहुत खतरनाक हो जाता है।, 'सार दिन सोने चाँदी की खाल चलें, पर करे बगैर कुछ नी मिलदा' अर्थात दुनिया में सब कुछ है पर बिना परिश्रम के कुछ भी प्राप्त नहीं होता।, 'दान करण तै धन कोनी घटदा' अर्थात दान देने से कभी धन नहीं घटता । 'पैसा तो आदमी के हाथ की मैल होवे' अर्थात परिश्रमी व्यक्ति अपने जीवन में बहुत धन कमा सकता है। उसे नुकसान से नहीं डरना चाहिए। 'बैठना बड़े आदमियाँ

म्हैं होना चाहिए' अर्थात हमेशा नेक और ऊंचे विचारों वाले आदमी से ही सम्बन्ध रखने चाहिए। 'नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा होता है' अर्थात संकीर्ण प्रकृति वाले दोस्त से बड़ी सोच वाला दुश्मन अच्छा होता है। 'अपणा मारै छाँ म्हें गेरे' अर्थात कितने ही आपसी मतभेद हो जाएँ या लड़ाई हो जाए फिर भी अपने आदमी में अपनापन रहता ही है। वो गैर व्यक्ति से हमेशा अच्छा होता है। 'पंच्चों का फैसला सिर मत्थे, पर पतनाला ती औ ही गिरेगा' अर्थात केवल मात्र दिखावे के लिए हाँ करना वास्तव में अपने ही मन की करना। 'ना खेलना, ना खेलन देना, गुत्ती में मूतना' अर्थात शरारती और विनाशकारी प्रवृत्ति के लोग न स्वयं कुछ करते हैं। न दूसरों को करने देते हैं। 'साँग जम्या नही भाई' अर्थात बात कुछ जची नहीं। 'जाओ धान रहो क्यारी, इबक नहीं तो अगली बारी' अर्थात अगर इस बार सफल नहीं हुए तो कोई बात नहीं अगली बार सफल हो जाओगे। कभी भी नुकसान से डरना नहीं चाहिए। 'खेती खसम सेती' अर्थात बिना सँभाल के कोई कार्य नहीं होता। केवल नौकरों के भरोसे काम नहीं हो सकता। 'पाधे नैना पूछिये' अर्थात नेक और उचित काम करते समय किसी से पूछने की जरूरत नहीं होती। 'तेरी अक्ल घास चरण गई थी के' अर्थात इतना समझदार होने के बावजूद तूने ये गलती कैसे की? 'अक्ल का दुश्मन' अर्थात नालायक, बेवकूफ, मूर्ख व्यक्ति। 'जे बाड़ खेत नै खावेगी, के होवेगा' अर्थात मालिक अगर स्वयं अपना नुकसान करे तो उसे कुछ प्राप्त नहीं हो सकता। 'कर्म ठोक' अर्थात परिश्रम से जी चुराने वाला। 'पैर की जूती पैर में ही सोहणी लाग' अर्थात जिस व्यक्ति की जितनी औकात हो उसे उतने तक ही रखना चाहिए। 'मोरी की ईंट चौबारे म्हें लग गई' अर्थात किसी नीच व्यक्ति को ज्यादा मान-सम्मान का मिल जाना। 'चल फेर पीड़ ले लंगोट' अर्थात तेरा चैलेंज स्वीकार है, तैयार हो जा। 'सूत ना कपास, जुलाहे गेलै लट्ठम- लट्ठा' अर्थात बिना किसी कारण के फिजूल बहस करना। 'चालणा पक्के का चै फेर क्यूँ ना हो, बैठण भाइयों म्हें चाहे बैर क्यूँ न हो' अर्थात व्यक्ति को उचित और सही मार्ग पर चलना चाहिए चाहे मार्ग लम्बा ही क्यों न हो और अपने भाइयों से हमेशा मिलना, उठना बैठना रखना चाहिए चाहे भाई कैसे भी हों। 'हाथ कंगन नै आरसी के, पढ़े लिखे नै फारसी के' अर्थात प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। 'नाई मेरे बाल कितने बड़े हैं, जजमान तेरे सामने आजेंगे' अर्थात कोई अगर अपने बारे डींगे मारे तो उसे कहा जाता है कि थोड़ा इन्तजार करो, समय आने पर तुझे सब पता चल जाएगा। 'बहन के घर भाई कुत्ता, ससुराल म्हँ जवाई कुत्ता' अर्थात कितना ही प्यारा और नजदीकी रिश्ता क्यों से ज्यादा समय तक वहाँ रहने से, मान-

सम्मान समाप्त हो जाता है। 'मुनाफा तो चोर होता है' अर्थात बिजनैस में अगर लाभ नजर आ रहा हो तो उसे काबू करने की कोश करनी चाहिए, ज्यादा कमाई के लालच में पड़कर उसे छोड़ना नहीं चाहिए। 'नफा नेफे म्हैं, टोटा टटरी म्हें' अर्थात लाभ कितना भी क्यूँ न हो, उसका पता नहीं चलता परन्तु नुकस की भरपाई अपनी जेब से करनी पड़ती है। 'कटै जाट का, सिक्ख नाई का' अर्थात किसी दूसरे की कीमत पर तुजुर्बा प्राप्त करना। 'कर ले जे काम, भजले जे राम' अर्थात अपना कर्म करना, प्रभु भजन करने के समान है। 'बूढी भैंस बोद्दा गड्डा, खा खसमाँ दा अड्डा' अर्थात जब तक साधन श्रेष्ठ न हों, उनसे लाभ की आशा नहीं करनी चाहिए। 'सौ बाह एक सुहागा' अर्थात अर्थपूर्ण बात करना। 'लस्सी का और लड़ाई का के बढ़ाना' अर्थात झगड़ा बढ़ाना बहुत आसान होता है, निपटाना बहुत मुश्किल। 'छोड़ यार, मरे का के मारना' अर्थात जो व्यक्ति कमजोर हो, उसे माफ कर देना चाहिए। 'ज्यादा सयाने धक्कै खांदे फिरें' अर्थात जरूरत से ज्यादा समझदारी नहीं दिखानी चाहिए। उससे कोई लाभ नहीं होता। 'पढ़ा लिखा मूर्ख' अर्थात केवल अक्षर ज्ञान से ही कोई ज्ञानी नहीं बन जाता। 'घर में नहीं दाने, अम्मा चली भुनाने' अर्थात पल्ले कुछ भी नहीं और बातें बड़ी-बड़ी करना। 'ऊपर मुँह करके थूकोगे तो मुँहपै पड़ेगा' अर्थात औकात से ज्यादा बात नहीं करनी चाहिए वरना भुगतनी पड़ती है। 'जो किसी वास्ते खाई खोदेगा, उसने कुआँ तैयार मिलेगा' अर्थात अगर कोई किसी का बुरा करता है उसे परमात्मा की ओर से उसका प्रतिफल अवश्य मिलता है। 'मरोड़ तो बड़े बड़याँ की नहीं रही' अर्थात अभिमानी व्यक्ति का अभिमान सदा नहीं रहता। 'सदा सदा तो राम का नाम ही रहेगा' अर्थात अन्त में अच्छाई की जी जीत होती है। 'पाप का घड़ा एक ना एक दिन भर ही जाएगा' अर्थात बुरा काम करोगे तो कभी-न-कभी पड़ेगा। फल भुगतना ही 'घड़ा भर के ही डूबे करै' अर्थात अति हो जाए तो उसका नुकसान उठाना ही पड़ता है। 'जूती का यार' अर्थात अधर्मी/पापी व्यक्ति जूते खाने पर ही सीधा होता है। 'उस दिन कोनी पैदा होया तो' अर्थात ये तेरे वश की बात नहीं; बेकार में मत उलझ। 'भाई काम तो करयाँ ते होवैगा, मुँहबोल के कोनी हाँदा' अर्थात केवल मात्र बातें करने से काम नहीं होता, उसके लिए परिश्रम करना ही पड़ेगा। 'नामी चोर पकड़या जावे, नामी शाहकमाजे' अर्थात कई बार बदनाम व्यक्ति बिना कोई बुरा किए भी दोषी मान लिया जाता है और धनवान व्यक्ति के पास अगर किसी समय धन न भी हो तो भी उसे धनवान ही माना जाता है और इस कारण वो कमाई कर जाता है। 'लिखतम के आगे, वकतम के' अर्थात अगर लिखित प्रमाण है तो उसे केवल मात्र बातों से नहीं

झुठलाया जा सकता। 'जाण मारे बाणिया, पछाण मारै चोर' अर्थात बणिया दुश्मनी होने पर ही मारता है और चोर अच्छी तरह जान लेने के बाद ही चोरी करता है। 'रस्सी जल गई पर बट नहीं गया' अर्थात सब कुछ खो जाने पर भी अपनी अकड़ नहीं छोड़ना। 'मुद्दई सुस्त, गवाह चुस्त' अर्थात किसी के काम में नाजायज और अनावश्यक रुचि लेना। 'कदी के दिन बड़े कदी की रात बड़ी' अर्थात अच्छे-बुरे दिन तो आते रहते हैं। व्यक्ति को अच्छे दिनों का नाजायज गुमान नहीं करना चाहिए। 'भूख म्हे गुल्लर पकवान अर्थात भूख लगने पर जो भी मिले वो किसी पकवान से कम नहीं होता और बिना भूख के स्वादिष्ट से स्वादिष्ट भोजन भी फीका लगता है। 'चोर अर ज़ार तो मौके पै ही पिटे करें अर्थात कई जुमों की सजा तो उसी मौके पर मिलती है। 'हींग लगया ना फटकड़ी रंग चोखा अर्थात लगा कुछ नहीं और काम भी हो गया। 'कणक गेल्लै घुण भी पिस्स जै अर्थात संगत के कारण कई बार कसूरवार के साथ बेकसूर भी पिट जाता है। 'इलाज़ तै परहेज अच्छा अर्थात परहेज में ही भलाई है। 'दीवे तलै अंधेरा अर्थात कई बार नाक के नीचे ही गलत काम होता रहता है और हमें पता ही नहीं चलता। बिल्ली के भाग तै छींका टूटया अर्थात कोई आशा न होते हुए भी काम का हो जाना। 'दूध देण आली गऊ की तो लात भी खाणी पड़ अर्थात काम करने वाले व्यक्ति की, गलत बात भी सहन करनी पड़ती है। 'तौं के बान्ने बैठया था अर्थात स्वयं कुछ न करके जब व्यक्ति दूसरों को काम न करने का दोष देता है तो उसे लोग इस तरह उत्तर देते हैं। 'मस-मसाँ हाँ करी अर्थात मुश्किल से हामी भरना। 'क्यूं मसया म्हैं हो रहया से अर्थात क्यों बिन बात के अकड़ रहे हो। 'आग्गा शेर का पाच्छा गादड़ का अर्थात बातें बड़ी-बड़ी करना पर समय आने पर दुबक जाना डर कर बैठ जाना। 'पानी भरणा अर्थात किसी का दबाव मानना। 'पानी मरणा अर्थात अपनी कमी के कारण सामने वाले से डर जाना। 'दूध के गरारे करें अर्थात पूरे मजे में है। 'चोरी बी अर सीना जोरी बी अर्थात गलत काम करना और साथ में अकड़ दिखाना। 'अपनी चिलम अपनी मरोड, पी-पी, ना तो दी तोड़ अर्थात अपनी स्वयं की वस्तु का अपनी ही तरह का आनन्द होता है। 'बीमारी आवै घोड़े की चाल, जावै कीड़ी की चाल अर्थात बीमारी आ तो एमदम जाती है लेकिन उससे निजात पाने में बहुत समय लगता है।' मरे बिना सुर्गनी मिलदा अर्थात बिना करें उस का फल नहीं मिलता। इसे कर्म के साथ जोड़ कर देखा गया है। अपणा हाथ जगन्नाथ अर्थात जो काम अपने हाथ से हो जाए उसका कोई मुकाबला नहीं। 'बुआ त्यार बैठी थी, फूफा लेण आग्या अर्थात दोनों ओर से पूरी तैयारी। 'थूक के बाँध अर्थात जिस काम को कोई बुनियाद नहीं

होती। 'जिसके घर काली, उसकी सदा दिवाली अर्थात जिस घर में दूध दही की मौज हो उस घर में सदा दिल्ली जैसा वातावरण रहता है। यहां काली से अभिप्राय भैंस से है क्योंकि भैंस का रंग काला होता है। इस हालत में पता चलता है कि हरियाणा के लोग घी-दूध-दही के कितने शौकीन होते थे और इन चीजों को कितना महत्त्व देते। 'तेरे जैसे घणे फिरैं अर्थात मुझे तेरी कोई परवाह नहीं। जिस व्यक्ति की कोई वैल्यून हो, उसे इस कहते हैं। लग गया तो तीर नहीं तो तुक्का अर्थात कई बार आशा न होते हुए भी जरा सी कोशिश करने से हो जाता। 'वही ढाक के तीन पात अर्थात काम का कुछ भी आगे न बढ़ना, वहीं का वहीं रहना। 'शक्ल नही अच्छी दी परमात्मा नै, बात तो अच्छी कर लिया कर अर्थात व्यक्ति में कुछ भी गुण देता। 'बहुओं के हाथ चोर मरवाणा अर्थात असशक्त व्यक्ति से मुश्किल कार्य करवाना। 'हंसाए का नाम नहीं होंदा, रुआए का नाम हो जै अर्थात चाहे किसी का कितना ही काम किया हो, थोड़ी सी गलत होने पर उस गलती का ही जिक्र रहता है, किए हुए अन्य काम का नहीं। 'मौका चूकी मणी, गावै आल पताल अर्थात अवसर चूक जाने पर बात नहीं बनती। 'व्यापार म्हंतो सोने चांदी के खालू चलें काडै किस्मत वाला अर्थात व्यापार में हर कोई नहीं कमा सकता भाग्यशाली ही कमा सकता है। 'लेण के बाद होर, देश के बाट होर अर्थात लेते वक्त कुछ कहना, देते वक्त कम करके देना। 'लड़ाई अर लस्सी का के बढ़ाना अर्थात इन्हें जितना मर्जी बढ़ाया जा सकता है, इसलिए लड़ाई जितनी जल्दी समाप्त कर देनी चाहिए। 'रज़ी धी नै ना दे, भूखी बहू ने दे दे अर्थात योग्य पात्र को ही देना चाहिए, दिखाने के लिए नहीं। 'मार पाच्छे पुकार अर्थात लड़ाई में जो पहले मार देता है वो ही जीत में रहता है। 'रांड तो रंडेपा काट ले, जे रंडवे काटण देवें अर्थात व्यक्ति विशेष तो किसी ना किसी तरह अपना दुख भूलने की कोशिश करता है लेकिन ये दुनिया भूलने दे तब ना। ' फिरै धक्के खांदा अर्थात अपना काम न करके फिजूल घूमना। 'जिसका कोई नी उसका राम होवै अर्थात यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि प्रभु सबका रखवाला है। 'राम तै डर है अर्थात जब कोई ताकतवर व्यक्ति किसी लाचार या बेसहारा को तंग करता है तो उसे प्रभु का डर दिखाने के लिए कहा जाता है। ' चमड़ी जाए पर दमड़ी ना जाए अर्थात अति कंजूस व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता है। 'म्हारी बिल्ली अर म्हार ते ही म्याऊं अर्थात जिसने पालापोसा हो या सहारा दिया हो, उसी को आँखें दिखाना। 'के नंगी नहावेगी के निचोड़ोगी अर्थात कुछ भी औकात ना होना। 'नानी खसम करें, दोहता दंड भरे अर्थात अगर खानदान पर कोई बदनामी का दाग लग जाए तो उसकी कई पीढ़ियों को दंड

भुगतना पड़ता है। 'खसम एक ही अच्छा होवै अर्थात एक ही घड़े में (समूह में रहना अच्छा होता है। 'माँ री माँ मन्नै दूसरा खसम कर लिया बहोत बुरा करया, माँ री मन्नै करके छोड़ दिया यू उस तै बी बुरा करवा अर्थात कोई गलत काम कर लेना और फिर उसे ठीक करने के लिए उससे भी गलत काम करना।'भाई जुल्म म्हतो घाटा नी छोड़या अर्थात किसी से बहुत बुरा व्यवहार करना। 'ज्यादा चिकडांदा चिकड़ म्हें पड़े अर्थात अपने आप को आवश्यकता से अधिक होशियार समझने वाला, अन्त में मूर्ख साबित होता है। 'जिसके पैर ना फूटी बुआई, ओ के जाणै पीर पराई अर्थात जिसने कभी दुख ना देखा हो वो दूसरे के दुख को क्या समझेगा। 'बाप बेटा बाराती अर्थात किसी अन्य को साथ न लेकर चलने वाले। 'आवा का आवा ऊत अर्थत सारा परिवार ही निकम्मा। 'जूती का यार अर्थात अधर्मी, पापी व्यक्ति जूते खाने पर ही सीधा होता है। 'नामी चोर पकड़या जावै, नामी शाह कमाजै अर्थात कई बार बदनाम व्यक्ति बिना कोई जुर्म किए। दोषी मान लिया जाता है और धनवान व्यक्ति के पास अगर किसी समय धन न भी हो, तो भी उसे धनवान ही मा इस कारण वो कमाई कर जाता है। 'लिखतम के आगे, बकतम के अर्थात अगर लिखित प्रमाण है तो उसे बातों से नहीं झुठलाया जा सकता। 'जाण मारे बाणिया, पछाण मारै चोर अर्थात बणिया दुश्मनी होने पर ही मारता है और चोर पहचानने के बाद चोरी करता है। 'मुदई सुस्त गवाह चुस्त अर्थात किसी के काम में नाजायज रुचि लेना। 'कदी के दिन बड़े, कदी की रात बड़ी अर्थात अच्छे बुरे दिन तो आते रहते हैं। व्यक्ति को अच्छे दिनों का गुमान नहीं करना चाहिए। 'भूख म्हगुल्लर पकवान अर्थात भूख लगने पर जो कुछ भी मिल जाए वह किसी पकवान से कम नहीं लगता। 'पैसा तो हाथ की मैल होवै अर्थात पैसा तो आनी जानी वस्तु है, उसे इतना महत्त्व नहीं दिया जाना चाहिए। मेहनती व्यक्ति अपनी मेहनत के बल पर पैसा कभी भी कमा सकता है। इसके लिए अपना ईमान नहीं खोना चाहिए।'रांड का जमाई अर्थात महत्वहीन, साधनहीन, असशक्त व्यक्ति। 'सवेरे का भूल्या सांझ नै घर आजै, उसने भूल्या नहीं कहते अर्थात अगर कोई व्यक्ति गलती करके उसे स्वीकार कर ले तो उसकी गलती क्षमा योग्य होती है।''[30]

निष्कर्ष:

कह सकते हैं कि 'प्रणम्य को प्रणाम" जीवनी में लेखक डॉ० जयभगवान सिंगला ने अपने पिता श्री लाला रामस्वरूप सिंगला के जीवन के वृत्तांतों एवं विविध घटनाओं को पाठकों के समक्ष जिस ढंग से और जिस भाषा में रखा है उसमें लाला जी के चरित्र और उनके अनुभव की सत्यता प्रत्यक्ष हो हुई है| इसमें वस्तुपरकता एवं भावात्मकता का समन्वय भी है। यह जीवनी डॉ० जयभगवान सिंगला द्वारा अपने पिता के जीवन की सच्ची समालेचना भी है। इसका प्रत्येक भाग लाला जी के जीवन की जिजीविषा और उनके क्रियाकलापों से संबंधित है। जीवनीकार ने इसमें उनके जीवन की विविध घटनाओं एवं विविध पहलुओं को, जिसे उन्होंने बहुत सूक्ष्मता से देखा भी था और भोगा भी था का सही एवं सटीक शब्दों में चित्रण किया है। इसके लेखक ने उनके जीवन के अनुभवों को सर्वाधिक महत्त्व देते हुए उनकी स्मृतियों को पुनर्जीवित करने का स्तुत्य एवं सफलतम प्रयास किया है। सफल जीवनी की विशिष्टता है असामान्य एवं महापुरुष तुल्य लाला रामस्वरूप सिंगला जी के असामान्य अनुभवों को पाठकों के समक्ष रखना। क्योंकि लेखक डॉ० जयभवान सिंगला उनके सुपुत्र हैं, इसलिए इस जीवनी में वर्णित सभी घटनाओं की सत्यता पर कोई प्रश्न चिह्न नहीं लगाया जा सकता। घटनाओं का सीधा संबंध दोनों से है, इसलिए यह जीवनी गुणवत्ता की दृष्टि से हिन्दी साहित्य की जीवनी विद्या को समृद्ध करेगी। लेखक ने अपने पिताजी के व्यक्तित्व एवं चारित्रिक गुणों से पाठक को अवगत ही नहीं कराया है वरन् इन्होंने अपने पिता की भाषायी कुशलता का भी परिचय कराया है। लेखक ने अपने पिता के जीवन के भोगे हुए अनुभवों से निकली कहावतों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों से उनके दानवीर, दयावीर, कर्मवीर, प्रखर बुद्धि क्षमता, भाग्यशाली, तेजस्वी,अदम्य साहस, अद्भुत संघर्ष शक्ति, अद्भुत दूरदृष्टा, साफगोई, जिंदादिली के धनी, स्वाभिमानी, विशाल हृदय के स्वामी, प्रगतिशील विचारों के धनी स्वरूप का चित्र खींचा है। इस जीवनी में लेखक डॉ० जय भगवान् जी ने अपने पिता जी के जिन गुणों को प्रमुखता विवेचित किया है उनको मैं- संस्कार, सिद्धांत, संयम,संघर्ष, सौभाग्य, स्वाभिमानी, शौकीन, समझदार सामाजिक सेवक एवं सामर्थ्यवान के रूप में क्रमबद्ध करुंगा।

उनका अभिव्यक्ति कौशल उनके जीवन के अनुभवों का प्रतिधित्व है। उनके द्वारा समय-समय एवं प्रसंगानुसार कहे मुहावरे एवं लोकोक्ति उनके व्यक्तित्व को और अधिक प्रभावी ढंग से

प्रस्तुत करता है। इनके प्रयोग से उनका वांछित अर्थ प्रभावी एवं सरलता से अद्भुत सौंदर्य के साथ संप्रेषित होता है| उनकी भाषा लोकशक्ति के प्राणों से जीवंत उठी है।

उनके द्वारा प्रयुक्त लोकोक्तियों एवं मुहावरों के प्रयोग भाषा में सरलता, सरसता, चमत्कार और प्रवाह उत्पन्न हुआ है, जो कि पाठक के हृदय को भीतर तक बेध जाती है। मुहावरे उनकी भाषा में चमत्कार उत्पन्न करते हैं तो लोकोक्तियाँ उनके मनार्थ को स्थायीत्व एवं गंभीर बनाती हैं। इसमें उनके जीवन का सत् है जो निश्चय ही इस जीवनी के पाठक का मार्गदर्शन करेगा।

संदर्भ सूची:

1. डॉ० जय भगवान सिंगला, 'प्रणम्य को प्रणाम', पृष्ठ-17, स्वप्रकाशन, कुरुक्षेत्र, प्रथम संस्करण, 26 जनवरी, 2023.

2. वही, पृष्ठ-17. 3. वही, पृष्ठ-19. 4. वही, पृष्ठ-64. 5. वही, पृष्ठ-64. 6. वही, पृष्ठ-93.

7. वही, पृष्ठ-95. 8. वही, पृष्ठ-116. 9. वही, पृष्ठ-116-117. 10. वही, पृष्ठ-120. 11. वही, पृष्ठ-117.

12. वही, पृष्ठ-124. 13. वही, पृष्ठ-127. 14. वही, पृष्ठ-132. 15. वही, पृष्ठ-132. 16. वही, पृष्ठ-134.

17. वही, पृष्ठ-139. 18. वही, पृष्ठ-139. 19. वही, पृष्ठ-141. 20. वही, पृष्ठ-149 21. वही, पृष्ठ -150

22. वही, पृष्ठ -159 23.वही, पृष्ठ -175 24. वही, पृष्ठ-216. 25. वही, पृष्ठ-218. 26. वही,पृष्ठ-220.

27. वही,पृष्ठ-220. 28. वही, पृष्ठ-220. 29. वही, पृष्ठ-226. 30. वही, पृष्ठ-275-286